International Indexed & Referred Research Journal, December, 2012, ISSN 0974-2832, RNI- RAJBIL- 2009/29954; VOL –IV* ISSUE- 47

शोध पत्र-इतिहास

स्वतंत्रता संग्राम युगीन राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना का उद्‌भव एवं अजमेर की पत्रकारिता

*** डॉ. रामचन्द्र रूण्डला ** भगवान सिंह शेखावत**

* – ** व्याख्याता, बाबा भगदानदास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिमनपुरा

December,2012

राजस्थान में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव अन्य हिन्दी प्रान्तों की तुलना में लगभग तीन दशक पश्चात् हुआ। इस प्रदेश की सामन्ती व्यवस्था, सामाजिक पिछड़ापन तथा निरक्षरता इतनी भयावह स्थिति में थी कि यह भू–भाग पत्रकारिता के पनपने के लिए उर्वर नहीं हो सकता था। धीरे–धीरे सन् 1885 के आस–पास लोक चेतना से संपृक्त पत्रकारिता का यहाँ श्रीगणेश हुआ। उस समय से लेकर सन् 1920 तक जो भी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुयी उनका तेवर मुख्य रूप से धार्मिक, साहित्यिक तथा शैक्षिक था। राजस्थान में राजनीतिक पत्रकारिता का आरम्भ हम सन् 1919 से मान सकते हैं जब 19 दिसम्बर सन् 1919 को दिल्ली में 'राजपूताना–मध्य भारत सभा' की स्थापना रियासतों में उत्तरदायी शासन की मांग को पूरा कराने तथा कांग्रेस की गतिविधियों से अपने को संबद्ध करने के उद्देश्य से की गई। नागपुर कांग्रेस सत्र के दौरान यह सभा कांग्रेस से सम्बद्ध हो गई और वर्धा से सन् 1920 में श्री विजयसिंह पथिक के संपादन में 'राजस्थान केसरी' नामक पत्र निकाला जाने लगा।

श्री बालगंगाधर तिलक के 'मराठा' व 'केसरी' के सहधर्मी इस पत्र ने राजस्थान और मध्य भारत की जनता के अभाव–अभियोगों, उनकी पीड़ाओं तथा दमन की कथाओं को जनता के सामने प्रस्तुत कर उनके विरूद्ध जनमत के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य किया। 'राजस्थान केसरी' ने 'देशी राज्यों का पोल खाता' शीर्षक से संपादकीय टिप्पणियों में गांधीजी के सत्याग्रह का हवाला देते हुए रियासती राज्यों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मनोवृत्ति पर प्रहार करते हुए उन्हें अपना रवैया बदलने की सलाह दी तथा लोगों में जागृति के प्रयास किए। सरकारी दमनचक्र ने राजनीतिक चैतन्य जागृत करने के इस प्रथम प्रयास को तो सदा के लिए बंद कर दिया परन्तु इसके पश्चात निर्भीक साप्ताहिक पत्र 'नवीन राजस्थान' के प्रकाशन ने पत्रकारिता की ऐसी स्वस्थ परम्परा डाली जो आज तक अनेक दैनिक और साप्ताहिकों के रूप में निर्बाध गति से चल रही है।

अजमेर में 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना के बाद सन् 1922 में इसके मुख पत्र 'नवीन राजस्थान' का जन्म हुआ। इस पत्र का तेजी से प्रसार होने लगा तथा शीघ्र ही यह पत्र राजस्थान की मूक जनता की वाणी बन गया। इसका आदर्श वाक्य ही यह था –

यह वैभव सुख की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन न रहे।/यदि इच्छा है तो यह है, जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

नवीन राजस्थान ने युवकों में राष्ट्रीय चेतना की भावना जागृत करने के लिए 'राजस्थान और नववर्ष' शीर्षक से खबर प्रकाशित करते हुए लिखा – 'नूतन वर्ष और प्रकृति का यह अभिनय नवीनता के नए उपासक और नव वर्ष को विशेष उत्सव के रूप में मनाने वाले राजस्थान के लिए एक विशेष संदेश रखता है। उसका संदेश है कि यदि तुम्हें वास्तव में अपनी वर्तमान अवस्था असह्य लगती है, यदि अत्याचारों के धाराप्रवाही दृश्यों को देखते–देखते जी ऊब उठा है, यदि अपने भाइयों की वर्तमान दुरावस्था के कारण क्रोध और घृणा से तुम्हारा जी जल रहा है तो सुख–भोगों और व्यक्तिगत इच्छाओं को विदा कर दिया जाए तथा सिर को हथेली पर रख लिया जाए। छिपे–छिपे घूंघट में रोने और गलियों में बातें करने से स्वतंत्रता नहीं मिलती।''

राजनीतिक जागृति के उस दौर में जब शीर्ष क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने जापान से देशवासियों को आजादी की लड़ाई के लिए आह्वान करते हुए जो संदेश भेजा उसे 'यंग इण्डिया' ने प्रकाशित किया। उस संदेश वाले पत्र को 'नवीन राजस्थान' ने 'यंग इण्डिया' से साभार ज्यों को त्यों अपने अंक में प्रकाशित किया ताकि राजपूताना की जनता उस महान क्रांतिकारी के विचारों से अवगत हो सके।

राजनीतिक चेतना जागृत करने में 'नवीन राजस्थान' के प्रभाव का परिमाण कितना बढ़ गया था, इसका अनुमान इसके दूसरे वर्ष के प्रथम अंक में लिखे अग्रलेख से हो जाता है, जो इस प्रकार है –'सत्ताधारी इतने चौंके क्यों हैं? इसीलिए न कि राजस्थान रूपी परतंत्रता के महाश्मसान में स्वतंत्रता की अग्नि प्रज्जवलित हो गई है। बिजौलिया से निकली हुई आग की चिनगारी ने सारे राजस्थान की सुप्त शक्तियों को जागृत कर दिया है। निर्मल चन्द्रिका में, प्रफुल्ल मल्लिका में, तरंगित नदी में, कूजित कुटी में, मृदुल समीरण में, कुसुमों की सौरभ में, बच्चों के हास्य में और वृद्धों के निःश्वास में सभी ओर उसी अग्नि की चिनगारियां उड़ती नजर आ रही है।''

नवीन राजस्थान पर प्रतिबंध लग जाने पर इसके संचालकों ने इसका नाम बदलकर 'तरूण राजस्थान' कर दिया। 'तरूण राजस्थान' ने भी ''नवीन राजस्थान'' की तरह मिशनरी पत्रकारिता को आगे बढ़ाते हुए आंदोलनों को समर्थन जारी रखा एवं राष्ट्रीय चेतना की दिशा में महती भूमिका निभाई। पत्र ने राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए युवाओं का आह्वान करते हुए लिखा –''हिन्दुस्तान को जरूरत है मर्दानगी की, मृत्यु को गले लगाने की, उस उत्कृष्ट कामना की, उस अदम्य लालसा

की जो स्वतंत्रता युद्ध के प्रत्येक सैनिक के लिए आवश्यक है चाहे यह अहिंसातमक हो अथवा हिंसात्मक। अब आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक नेता और प्रत्येक पत्र जो भारत की स्वतंत्रता को अपना ध्येय बनाए हुए है, लोगों के सोए हुए शौर्य को जागृत करे, निर्भयतापूर्वक देश के लिए मर मिटने क लिए लोगों की सैंकड़ों, हजारों और करोड़ों की संख्या में आह्वान करे और फिर प्रसन्तापूर्वक उन्हें फांसी के द्वारा, गोली खाकर अथवा मशीनगनों से जल–भून जाने दे। हमें तलवार की जरूरत नहीं है, रिवाल्वर, मशीनगण और एरोप्लेन की जरूरत नहीं है। पतंग जब जलने जाता है, तलवार बांध कर नहीं जाता। इसी तरह, आओ हम भी मरने चले, हंसी खुशी गा–गा कर प्राण देने चलें।''

राजस्थान की पत्रकारिता के इतिहास में 'त्यागभूमि' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है क्योंकि इस पत्रिका ने सन् 1927–28 में देश में जो नए राजनीतिक बदलाव हुए तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ, उसे स्वर देने का उल्लेखनीय कार्य किया। इसने अपने पहले ही अंक में अपने संपादकीय में लिखा – ''राजस्थान आज क्षीण और मलिन क्यों है? उसके पुत्र उसके लिए मन लगाकर कुछ करते नहीं, आगे बढ़ –बढ़ कर कुछ सहते नहीं, उन्हें कुछ दुःख हैं, कष्ट है, शिकायत हैं, वे यदि दूर हो जाएं तो सुख से, प्रलय तक इस नरकवास को वे अहोभाग्य समझते रहेंगे। स्वाधीनता मनुष्य का जीवन है, पराधीनता मृत्यु।

राजस्थान के पुत्र अभी स्वाधीनता के मतवाले नहीं हुए। उनकी इस मूर्च्छा को दूर करके उनके दिल में अपनी जन्मभूमि के लिए कुछ करने, देने और सहने की तड़प यदि 'त्यागभूमि' ने पैदा कर दी, तो उसके जीवन का कार्य समाप्त हो गया समझिए। राजस्थान के जीवन के एक–एक अंग में गहरी उथल–पुथल मचाने की धुन इसे सवार है। 'त्यागभूमि' केवल बुद्धि की भूख बुझाने नहीं आई है, बल्कि आत्मा को बल देने के लिए भी आई है।''

त्यागभूमि के पहले पृष्ठ पर हमेशा राष्ट्रीय कविताएँ छपती थी, जिनका लक्ष्य राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत और परिपुष्ट करना होता था। इसके दूसरे अंक के पहले पृष्ठ पर 'पैदाकर' शीर्षक से प्रकाशित स्वाधीनता सेनानी और साहित्यकार क्षेमानन्द राहत की निम्न कविता इस संदर्भ में दृष्ट्व्य है–

पैदाकर

वतन की धुन पुजारी के कोई सामान पैदा कर।
जिगर में जोश दिल में दर्द, तन में जान पैदाकर।।
उड़ा दे जाये दल भर में जड़ों की वह कुरफतें।
बपाकर ऐसा महशर या कोई तूफान पैदाकर।।
हम अपनी शान की खातिर खुशी से जान पर खेलें।
कि हों हम आन पर कुरबान वह ओसान पैदाकर।।
कदम बोसी को चल के सर के बल आयेगी आजादी।
कि मर मिटने की ख्वाहिश ऐ दिले नादान पैदाकर।।

देश के सिंह पुत्रों का जोश जागृत करने में कवि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसके राष्ट्रगीत को सुनकर वीर योद्धा देश पर अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए निकल पड़ते हैं। 'त्यागभूमि' के श्रावण सम्वत् 1986 के अंक में छपी ''कवि से'' नामक कविता में कालीप्रसाद भटनागर की ये पंक्तियां इसी कवि कर्म को प्रेरित कर रही है–

कवि से

गा दे, गा दे, एक बार फिर हे कवि, वह मतवाला राग,/धधक उठे युवकों के उर में, जिससे महाक्रान्ति की आग।/जल जावे जीवन की ममता, छूट जाए प्राणों का प्यार,/नस–नस फड़क उठे युवकों की, भड़क उठे सोया प्रतिकार।/भूलें, सुध हम तन–मन–धन की, रहे न सुख–दुख की पहचान,/रहे ध्यान केवल इतना ही, 'जय हो' या जीवन बलिदान।

'जैन प्रकाश' ने 25 नवम्बर सन् 1930 को हिन्दी–गुजराती भाषा में राष्ट्रीय अंक का प्रकाशन किया। इस पत्र ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया। इस राष्ट्रीय अंक में महात्मा गांधी के आन्दोलन, स्वाधीनता संग्राम के उद्देश्य, अहिंसक मुक्ति के स्वरूप, भगवान महावीर और अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन, युद्ध और जैन धर्म, राष्ट्रीय क्रांति बनाम धर्म युद्ध आदि विविध विषयों से युक्त ओजमयी सामाग्री का प्रकाशन किया गया।

राष्ट्रीयता एक उदात्त भावना है। आक्रमणकारी से राष्ट्र की रक्षा करना मानवता की सच्ची सेवा ही है। इससे अहिंसा धर्म पर आँच नहीं आती। राष्ट्रीयता की इसी व्यापक दृष्टि को 'सत्य संदेश' ने इस प्रकार लिखा – 'यदि एक राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र के ऊपर आक्रमण करता है, उसे पराधीन बनाता है या बनाए हुए है, इसलिए पीड़ित राष्ट्र अगर राष्ट्रीयता की उपासना करता है तो यह मनुष्यता की ही उपासना है क्योंकि इसमें अत्याचार या अत्याचारी का ही विरोध किया जाता है, मनुष्यता का नहीं।''

इसी प्रकार 'राजस्थान' ने अपने 6 अप्रैल सन् 1936 के अंक में युवाओं में चेतना जागृत करने के उद्देश्य से लिखा – 'जब तक हम अकर्मण्य, साहसहीन और भीरू बैठे रहेंगे तब तक हम एक भी अधिकार नहीं प्राप्त कर सकेंगे। जिस दिन हमने यह निश्चय कर लिया कि यदि जीवित रहेंगे तो मनुष्य की भांति अधिकार संपन्न होकर ही, उस दिन फिर कोई शक्ति यह साहस भी नहीं करेगी कि वह एक क्षण के लिए भी हमारे मार्ग के बीच में होकर हमें निरूत्साहित एवं कर्त्तव्यच्यूत कर सके।

अतः आओ! राजधानी नवयुवकों, आओ!! महाराणा प्रताप की संतान, वीर दुर्गादास के पुजारी, भामाशह के प्रतीक और भक्त मीरां के प्रतिबिंब आओ!! हम अब एक क्षण का भी विलम्ब किए बिना निश्चित ध्येय, निश्चित नीति और निर्धारित मार्ग से सत्य और अहिंसा के शस्त्र को हाथ में रखकर आगे बढ़े।'' राजस्थान के इसी अंक में युवाओं में जोश का संचार करने वाली कविता, 'तमन्ना' शीर्षक से प्रकाशित हुई। जो इस प्रकार है–

तमन्ना

चढ़ लेने दे हृदय आज बलिवेदी पर चढ़ लेने दे।

त्यागक्षेत्र में सब सेना से एक कदम बढ़ लेने दो।।
धर देने दे, माँ चरणों में प्राण पुष्प धर देने दो।
अपनेपन को भूल, आज सर्वस्व भेंट कर देने दो।।

श्री जगदीश माथुर 'दीपक' ने अजमेर से सन् 1930 में 'मीरां' का प्रकाशन शुरू किया था। इस पत्र के माध्यम से श्री दीपक ने राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों और शहीदों के जीवन चरित्र जनता तक पहुँचाये। एक पैर जेल में और एक पैर प्रेस में, की–सी स्थिति में 'मीरां' क्रान्तिकारियों का मिलन स्थल था। ऐसे ही वातावरण में 'मीरां' के शहीद अंक और भारत अंक प्रकाशित हुए। इन अंकों में युवकों को प्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के जीवन चरित्र प्रकाशित किए गए।

इस प्रकार राजस्थान के सुदूर गाँवों से लेकर बड़े नगरों में चल रहे विभिन्न प्रकार के जन–आंदोलनों की पृष्ठभूमि में राजस्थान में पत्रकारिता के गढ़ अजमेर क्षेत्र में जिस राजनीति मूलक पत्रकारिता का प्रादुर्भाव हुआ उसने पूर्ण स्वराज्य मिलने तक क्रांति का बिगुल बजाये रखा। अपने निर्भीक, स्पष्ट और प्रखर संवादों, समाचारों, लेखों, साहित्यिक रचनाओं और संपादकीय टिप्पणियों के माध्यम से इन पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना का विकास करके राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया तथा स्वाधीनता प्राप्ति के लिए हो रहे विभिन्न आन्दोलनों को गति प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ

1 केला, भगवान दास – देशी राज्यों की जन जागृति, पृ. 46
2 राठौड़, एल.एस. – पोलिटिकल एण्ड दी कॉन्सटीट्यूशनल डवलपमेंट इन दी
3 प्रिन्सली स्टेट्स ऑफ राजस्थान, पृ. 40
4 राजस्थान केसरी, 26 दिसम्बर 1920
5 वैदिक, वेदप्रताप – हिन्दी पत्रकारिता–विविध आयाम, पृ. 166
6 राजस्थान केसरी विजय सिंह पथिक स्मृति ग्रंथ, पृ. 230
7 नवीन राजस्थान, चैत्र शुक्ल 5, रविवार, सम्वत्, 1979
8 वही, 3 अगस्त 1922
9 वही, माघ शुक्ल 11, रविवार संवत् 1979
10 राजस्थान केसरी विजय सिंह पथिक स्मृति ग्रंथ, पृ. 18
11 तरूण राजस्थान, 1 मार्च 1925
12 पुरोहित, प्रकाश – राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम कालीन पत्रकारिता, पृ. 76
13 त्यागभूमि, विजयादशमी, सम्वत् 1984
14 प्रभाकर, मनोहर – राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता, पृ. 118
15 त्यागभूमि, मार्गशीर्ष, सम्वत् 1984, पृ. 69
16 वही, श्रावण, सम्वत् 1986, पृ. 555
17 भानावत, संजीव – सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता, पृ. 206
18 जैन प्रकाश, 25 नवम्बर 1930
19 सत्य संदेश, 1 नवम्बर 1935, पृ. 597
20 राजस्थान, 6 अप्रैल 1936 वही
21. मीरां, 22 दिसम्बर 1945